The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 7 | July 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

डिजिटल युग में मुण्डा जनजातियों की संस्कृति एंक मानवशास्त्रीय अध्ययन

सुशीला बागे

मानवशास्त्र विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची । Email ID-bagesushila0@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.22097878

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 23-06-2026

Accepted: 19-07-2026

Published: 21-08-2026

Keywords:

डिजिटल युग, मुण्डा जनजाति, जनजातीय संस्कृति, लोक परंपराएँ, भाषा शिक्षा, लोक कथा ।

ABSTRACT

डिजिटल युग में मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है, जैसे-सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक शिक्षा इत्यादि सभी क्षेत्रों पर डिजिटल युग का प्रचार-प्रसार हो गया है । मनुष्य अपने जीवन में डिजिटल युग से पुरी तरह जुड चुका है, अर्थात बहुत सारे बडे-बडे काम कुछ ही समय में आसानी से हो रहे है । लोगों को सभी प्रकार की सुविधाऐं आसानी से मिल रही है । डिजिटल युग में विभिन्न तरह के यंत्र द्वारा जैसे-मोबाईल से किसी दूर दराज में रहने वाले व्यक्ति से फोन क़ॉल के माध्यम से सेकेण्ड भर में उनका हाल-चाल पुछ सकते है । मोबाईल इंटरनेट, लैपटॉप से ऑनलाइन शिक्षा से जुड रहे है, देश-विदेश का पल-पल की समाचार सुनने को मिल रही है, डिजिटल युग के माध्यम से एक जगह से दूसरे जगह की संस्कृति को भी जानने समझने लगे है भारत की जनजातीय समाज जो परंपरागत सामुदायिक संगठन और स्वदेशी ज्ञान पर टिका हुआ है । मुण्डा जनजाति जो मुख्यता झारखण्ड ओडिसा, पश्चिम बंगाल और छतीसगढ के कुछ भागों में निवास करती है, झारखण्ड के राँची और खुँटी जिला में मुण्डा जनजातियों का संख्या बहुत अधिक देखने को मिलता है । यहाँ पर अपनी विशिष्ट भाषा, परंपराओं, सामुदायिक जीवन प्रकृतिक जीवन और लोककलाओं के लिए जानी जाती है । झारखण्ड प्रकृति की सुन्दरता से घिरा हुआ एक राज्य है, घने जंगल, पर्वत नदी नाला से भरा हुआ है, फिर भी डिजिटल युग का प्रचार-प्रसार गाँव-गाँव तक पहुँच गया है । लोग गाँव-देहात में डिजिटल युग तो पहुँच गया है, लेकिन अभी उसका सही उपयोग नही कर पा रहें है ।

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

ग्रामिण क्षेत्र होने के कारण लोगो के पास मोबाईल तो है लेकिन नेटवर्क सही नही होने के कारण दिक्कत हो रही है, शिक्षा की कमी के कारण भी सही उपयोग नही कर पाते है । भाषा भी डिजिटल युग में एक बडा कारण है. यदि डिजिटल साधनों का उपयोग स्थानीय ज्ञान, भाषा और परंपराओं को सम्मान किया किया जाए तो सभी को आसानी से सारी सुविधाएँ मिल सकती है । डिजिटल युग होने के कारण जनजातीय संस्कृति में बहुत कुछ बदलाव देखने को मिल रहे है, इसे लोगों तक अच्छी शिक्षा पहुँच पा रही है ।

भूमिका (Introduction)-

वर्तमान समय में भारत जैसे बहु-सांस्कृतिक देश में जनजातीय समाज की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है । वन, पर्वत, नदियाँ और प्राकृतिक संसाधनों के साथ आधारित जनजातीय समुदायों की अपनी विशिष्ट भाषा, लोगकथाएँ गीत-संगीत, देवी-देवता इत्यादि एक जीवन दर्शन के रुप में संचालित हो रही है । 21वीं सदी एक सुचना प्राधौगिकी से जुडी है जैसे-इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मिडिया, ऑनलाइन शिक्षा, ई-गवर्नेस और डिजिटल बाजार इन सब नें हमारे जीवन को बदल दिया है । डिजिटल युग के सकारात्मक पक्ष के रुप में देखा जाए तो यूटयूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक जैसे विभिन्न प्रकार के चैनल के माध्यम से हमारे जनजातीय लोक कला, नृत्य संगीत संस्कृति को पुरी दुनियाँ में फैल रही है । डिजिटल युग के माध्यम से जनजातीय समाज के लोग अपने-अपने हुनर को प्रस्तुत कर रहे है । साथ ही साथ अपना जीवन यापन के लिए एक आय का स्रोत भी बन चुका है, इसमें शहरी हो या ग्रामीण क्षेत्र के लोग सभी जुडे हुए है । लोगो के जीवन में कम मेहनत करके पैसा कमाने का रास्ता भी मिल गया है । आज कल सभी अपने जरुरतों के सामान भी ऑनलाइन के माध्यम से खरीद लेते है. घर बैठे सब चीज आसानी से मिल जा रहा है । लोगो को बाजार भी जाने की जरुरत नही पड रही है, इस डिजिटल युग में ग्रामीण क्षेत्र के लोगो को भी अच्छी सुविधाएँ मिल रही है । गाँव-देहात के लोग भी ऑनलाइन शॉपिंग एप के माध्यम से घर का सामान, कपडा, रासन इत्यादि मांगा रहे है, अपने घर में जो हस्तशिल्प के द्वारा बनाया गया सामान को भी ऑनलाइन के माध्यम से बेचने में सुविधा मिल गई है । डिजिटल युग का प्रचार-प्रसार होने से शिक्षा के विकास परज्यादा असर पडा है । गाँव-देहात के बच्चों तक जो सुदूरवर्ती के इलाके में रहते है वे भी इस डिजिटल युग को अपने जीवन में उपयोग कर रहे है । डिजिटल युग नें शिक्षित अशिक्षित सभी के काम को आसान कर दिया है ।

अध्ययन की उद्देश्य (Objectives)

. मुण्डा जनजाति की सास्कृतिक विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय देना

. डिजिटल युग के प्रमुख तत्वों मोबाईल, इंटरनेट सोशल मिडिया, डिजिटल शिक्षा की पहचान करना।

. मुण्डा समाज की भाषा, परंपराओं, शिक्षा, आजीविका और सामाजिक संबंधों पर प्रभाव का अध्ययन।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)-

शरद चन्द्र राय (1912) पुस्तक "**मुण्डा एंड देयर कंट्री**" में अपने अध्ययन में बताया कि मुण्डा जनजाति की सामाजिक, सांस्कृतिक धार्मिक परंपराओं का विस्तृत वर्णन किया है। यह पुस्तक मुण्डा संस्कृति को समझने की आधारशिला मानी जाती है।

वेरियर एल्विन (1964) पुस्तक **"द लिटिल" द ट्राइबल वाल्ड**" इस पुस्तक में जनजातीय जीवन की सरलता, प्रकृति-पूजा और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता पर प्रकाश डाला। उन्होने आधुनिक प्रभावों से उत्पन्न संकटों की और संकेत किया है।

नंदिनी सुंदर (1997) पुस्तक **"संवाल्टर्न एण्ड सॉवरेन्स इस पुस्तक**" में जनजातीय समाज पर राज्य, विकास और आधुनिक संचार के प्रभावों की चर्चा है इसमें यह दिखाया गया है कि बाहरी नितियाँ संस्कृति को कैसे प्रभावित करती है।

मार्शल मैक्लुहान (1964) पुस्तक "अंडर स्टैडिंग मीडिया: द एक्सटेंशन्स ऑफ मैन" इस पुस्तक में मैक्लुहान का प्रसिद्ध कथन "माध्यम ही संदेश है" डिजिटल युग में, और अधिक प्रासंगिक हो गया है। उन्होंने कहा कि तकनीक केवल साधन नहीं, बल्कि, समाज की सोच और व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती है।

मैनुअल कास्टेल्स (1966) पुस्तक "द रिस ऑफ द नेटवर्क सोसायटी" कास्टेल्स ने बताया कि सुचना और संचार तकनीक (ICT) के कारण है, "नेटवर्क समाज" का उदय हुआ है, जहाँ सामाजिक, आर्थिक और सास्कृतिक संबंध डिजिटल नेटवर्को से संचालित होने लगे है। उनके अनुसार डिजिटल माध्यम न केवल संचार को तेज बनाते है, बलि पहचान और संस्कृति के स्वरूप को भी बदलते है।

क्ले शिर्को (2008) पुस्तक "हेरी कॉमस एवरीबॉड़ी" इस पुस्तक में इंटरनेट और सोशल मीडिया ने आम लोगों को सूचना उत्पादन और साझा करने की शक्ति दी है। यह सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का लोकतंत्रीकरण करता है, परंतु साथ ही सुचना की गुणवत्ता और परंपरागत संस्थाओं की भूमिकी पर सवाल उठाता है।

शोध-पद्धति (Methodology)

. यह अध्ययन गुणात्मक पद्धति पर आधारित है ।

. पुस्तकों शोध –पत्रो और पत्रिकाओं के अध्ययन द्वितियक स्रोत ।

. झारखण्ड एंव आसपास के क्षेत्रों से उपलब्ध केस-स्टडी और समाचार रिपोर्ट का विश्लेषण ।

.डिजिटल माध्यमों (सोशल मीडीया, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर मुण्डा संस्कृति की प्रस्तुति का अध्ययन ।

मुण्डा जनजाति: एक संक्षिप्त परिचय- मुण्डा जनजाति मुख्यतः झारखंड के छोटानागपूर पठार क्षेत्र में निवास करती है । इनकी भाषा "मुण्डारी" है, जो ऑस्ट्रो एशियाटिक भाषा परिवार से संबंधित है । मुण्डा जनजाति भारत की प्राचीन और प्रमुख जनजातियों में से एक है । मुण्डा समाज की पहचान उसकी भाषा (मुण्डारी), सामुदायिक व्यवस्था (खुँटकट्टी), परंपरागत प्रकृति-पूजा, पर्व-त्यौहार, नृत्य-संगीत, लोक-कथाएँ और सामूहिक निर्णय-प्रणाली से जुड़ी है लंबे समय से यह समाज बाहरी प्रभावों से अपेक्षाकृत दूर रहा, परंतु अब डिजिटल साधनो के प्रसार से जीवन के हर क्षेत्र में बदलाव दिखाई देने लगे है । डिजिटल युग के प्रभाव को केवल सकारात्मक या नकारात्मक नहीं कहा जा सकता है । एक ओर इससे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और शासन तक पहुंच बड गई है और दूसरी ओर भाषा, संस्कृति, परंपराओं से दुरी तथा उपभोगक्ता वाद और सांस्कृतिक एक रूपता जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई है । मुण्डा जनजातीय संस्कृति को डिजिटल युग के प्रभावों को सरल और सहज तरीके से सीखना एवं समझना पड़ेगा ।

परंपराएं, संस्कृति एंव पर्व-त्योहार- जनजातीय समाज के पूर्व-त्योहार के रीति-रीवाजों को सोशल मीडिया के द्वारा साझा किया जा रहा । इससे बाहरी दुनियाँ के लोगों के साथ हमारी एक पहचान बढ रही है । सोशल मीडिया की वजह से ही एक देश से दूसरे देश की संस्कृति को भी जान पा रहे है । जनजातीय समाज मे धार्मिक त्योहार हो या पर्व-त्योहार सबी में बहुत कुछ बदलाव देखने को मिल रहा है । आधुनिक तरीके से धार्मिक पूजा विधि-विधान भी किया जा रहा है, पर्व-त्योहार में नागपुरी गाना, हिन्दी गाना में नाचना गाना हो रहा है ।

पुराने रीति-रिवाज को धारे-धीरे छोड दे रहे है । जब से डिजिटल युग आया है, तब से लोगों के रिति-रीवाज, रहन-सहन, बोली-भाषा सब बदल गया है । त्योहारों में पारंपारिक रूप से प्रोग्राम होता है, वहाँ सब सामूहि रूप से शामिल हो रहे है ।

सांस्कृतिक विशेषताएँ- प्रकृति रूप से केन्द्रित आस्था:- सरना-स्थल, वृक्ष, पहाड़, नदी और पूर्वजों की पूजा इन सभी जगहों पर भी डिजिल युग का प्रभाव देखने को मिलता है । सभी जगहों में कार्य द्वारा सुरक्षित रखा गया है, लेकिन बहुत कुछ बदलाव भी हो गए है । सभी दर्शनीय स्थल पर बिजली, लाइट, पेंटिंग किया गया है पूरा घेरा बंदी करके सुरक्षित कर दिया गया है ।

सामुदायिक जीवन:- गाँव का सामूहिक निर्णय परंरागत पंचायत (मांझी, पाहन आदि की भूमिका होती है पहले जमाने में गाँव में कोई सभा या बैठकी होती थी तो एक महिना पहले एक चिट्ठी बनाकर सभी के पास

पहुँचा दिया जाता था । लेकिन जब से डिजिटल युग आया तब से एक सप्ताह पहले या तुरंत भी फोन कॉल के

माध्यम से जानकारी पहुंचाते है । सभा में लिखा-पढी भी होती है, लेकिन अब वहाँ भी फोन से फोटो खींच लेते है या रिकॉडिंग कर लेते है, इस प्रकार सामुदायिक जीवन में भी बदलाव देखने को मिलता है ।

पर्व-त्योहार : - सरहुल, करम, मागे, बाहा इन सब त्योहारों में गाँव के सभी लोग मिलकर खुशियाँ मनाते है । पहले गाँव में मौखिक रूप से गाना सब गाते थे, ढोल, मंदर, नगढा से सभी बुढे बुजुर्ग, जवान युवाती, बच्चे मिलकर नाचने गाते थे लेकिन जब से डिजिटल युग आया तब से सब डीजे रिकॉडिंग गाना इत्यादि को बजा कर खुशी मनाते है, इसमें बुर्जूग समिल नहीं हो पाते हैं ।

आजीविका :- परंपरागत रूप से कृषि, वनोपज, हस्तशिल्प पर आधारित अपना जीवन यापन करते है । यह संस्कृति मौखिक परंपरा पर आधारित रही है जिसमें ज्ञान पीढी दर पीढी कथाओं, गीतों और अनुष्ठानों से आगे बढता है ।

डिजिटल युग और जनजातीय संस्कृति-

डिजिटल युग वह समय है जिसमें मोवाइल फोन इटरनेट, कंप्यूटर और सोशल मीडिया हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए है । आज यह तकनीक केवल शहरो तक सीमित नहीं है, बल्कि धीरे-धीरे जनजातीय क्षेत्रों तक भी पहुंच रही है । इसका जनजातीय समाज और उनकी संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है । डिजिटल युग के कारण जनजातीय समाज को कई लाभ मिले है । मोबाइल और इंटरनेट से शिक्षा और जानकारी तक उनकी पहुंच बढी है । बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते है और सरकारी योजनाओं के बारे में जान सकते है, लोकगीत नृत्य और परंपराओं को वीडियों और ऑडियों के रूप में सुरक्षित किया जा रहा है । इसके आलावा, हस्तशिल्प और वन-उत्पाद ऑनलाइन बेचकर आमदनी बढ़ाने के अवसर भी मिले है ।

लोककला और लोकसंगीत-

नृत्य, गीत, वाद्य यंत्र और चित्रकला जनजातिय संस्कृति की आत्मा है । ये केवल मंनोरंजन का साधन नही बल्कि सामाजिक एकता और धार्मिक आस्था से जुडे होतो है ।

जनजातीय संस्कृति का स्वरूप-

जनजातीय संस्कृति एक समग्र जीवन पद्धति है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सभी पहलू शामिल होते है । प्रत्येक जनजाति कीअपनी विशिष्ट पहचान होती है , उनकी भाषा रिति-रिवाज, लोककला, पर्व-त्योहार और विश्वास प्रणालियों में परिलक्षित होती है ।

भाषा और मौखिक परंपरा-

जनजातीय समाजों में, भाषा केवल संचार का माध्यम नही, बल्कि सास्कृतिक, स्मृति का आधार होती है । लोककथाएँ, मिथक, गीत और इतिहास मौखिक रूप से पीढी दर पीढी आगे बढते है ।

जनजातीय क्षेत्रों में डिजिटल युग का प्रवेश-

डिजिटल युग का प्रवेश आज धीमी गति से जनजातीय क्षेत्र मे भी हो रहा है । जनजातिय समाज सूचना और संचार के साधनो से दूर था, वहीं अब मोबाइल फोन, इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं के कारण बदलाव दिखाई देने लगा है । गाँवों में मोबाइल नेटवर्क पहुँचने से लोग बाहर की दुनियाँ से जुड़ रहे है । पहले जनजातिय इलाको में सडक, बिजली और संचार की सुविधाएँ कम थी, लेकिन अब सरकार और निजी कम्पनीयों के प्रयास से धीरे-धीरे मोबाईल नेटवर्क और इंटरनेट वहाँ पहुँच रहा है । आज कई जनजातीय युवा मोबाइल फोन का उपयोग करने लगे है । मोबाइल और टी0वी0 के माध्यम से वे बाहरी दुनियाँ की भाषा, पहनावा और जीवन शैली देख पा रहे है, इससे उनके सोचने-समझने का तरीका बदल रहा है ।

डिजिटल युग के सकारात्मक प्रभाव-

शिक्षा में सुधार-

डिजिटल युग से जनजातीय बच्चों को शिक्षा के नए अवसर मिले है । मोबाइल और इंटरनेट से वे ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते है। वीडियो के माध्यम से पढ़ना आसान हो गया है । सरकारी योजनाओं और छत्रवृति की जानकारी भी आसानी से मिल जाती है । अब जनजातीय लोग अपने अधिकारो, सरकारी योजनाओं और सुविधाओं के बारे में जान पा रहे है, इससे उनमें जागरुकता बढ़ी है और वे अपने हक के लिए आवाज उठा पा रहे है ।

संस्कृति का संरक्षण-

डिजिटल तकनीक से लोकगीत, नृत्य और परंपराओं को वीडियों और ऑडियों के रूप में सुरक्षित किया जा सकता है । इससे आने वाली पीढ़िया अपनी-अपनी संस्कृति को जान सकेंगी ।

रोजगार और आमदनी-

हस्तशिल्प, चित्रकला, आभूषण और वन-उत्पाद को ऑनलाइन बेचने के अवसर मिले है। इससे जनजातीय लोगों की आमदनी बढ़ सकती है।

डिजिटल युग के नकारालक प्रभाव-

परंपराओं में कमी-

बाहरी संस्कृति के प्रभाव से कई जनजातिय रीति-रिवाज कमजोर हो रहे है। युवा पारंपरिक पहनावे और त्योहारों में कम रुचि लेने लगे है।

भाषा का संकट-

डिजिटल माध्यमों में प्रमुख भाषाओं का ज्यादा प्रयोग होता है, इससे जनजातिय भाषाएँ खत्म होने के कगार पर है।

मोबाइल और सोशल मीडिया की लत-

जनजातिय युवा मोबाइल और सोशल मीडिया में ज्यादा समय बिताने लगे है , जिससे पढाई, काम और सामाजिक जीवन प्रभावित हो रहे है।

डिजिटल युग के प्रमुख तत्वः-

. मोबाइल और इंटरनेट की उपलब्धता।

. सोशल मीडिया (फेसबुक, व्हाटसएप, यूट्यूब, इस्टाग्राम)

. डिजिटल शिक्षा (ऑनलाइन कथाएं, ई-लर्निंग)

. ई-शासन (आधार, ऑनलाइन प्रामाण पत्र, सरकारी पोर्टल)

. डिजिटल अर्थव्यस्था (UPI, ऑनलाइन बाजार)

डिजिटल युग का मुण्डा संस्कृति पर प्रभाव (Discussion)-

डिजिटल युग ने मुण्डा जनजाति की संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। पहले मुंडा समाज का जीवन, जल, जंगल, जमीन, कृषि और सामुदायिक परंपराओं पर आधारित था, उनकी संस्कृति में अपनी भाषा, धर्म, पारंपरिक नृत्य-गीत, पर्व-त्योहार और सामूहिक जीवन का विशेष महत्व था, लेकिन डिजिटल तकनीक के आगमन से उनके जीवन में कई

बदलाव आए है । डिजिटल युग का सबसे बड़ा सकारात्मक प्रभाव शिक्षा और जानकारी के क्षेत्र में देखा का सकता है । मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से मुण्डा समाज के बच्चे और युवा पढ़ाई कर रहे है । सरकारी योजनाओं और रोजगार की जानकारी मिल रही है । पारंपरिक गीत-नृत्य और रीति-रिवाजों को वीडियो के रूप में सुरक्षित रखना भी संभव हुआ है, जिससे अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखने में मदद मिल रही है । अतः डिजिटल युग मुण्डा जनजाति संस्कृति के लिए अवसर और चुनौती दोनों है । संतुलित और समझदारी से तकनीक अपनाने पर मुन्डा संस्कृति को सुरक्षित रखा जा सकता है ।

सकारात्मक प्रभाव

. मुण्डारी भाषा में गीत,

. कहानियां और लोक नृत्य के वीडियो ।

. यूट्यूब और सोशल मीडिया

इन सभी जगहों पर अपने समाज के रीत-रिवाज को डिजटल युग के माध्यम से साझा किए जा रहे है । कुछ युवा डिजिटल माध्यम से अपनी भाषा, संस्कृति सिखने-सिखाने का प्रय़ास कर रहे है ।

नकारात्मक प्रभाव-

. शिक्षा के क्षेत्र में भाषा से संबंधित प्रभाव

. डिजिटल युग में अंग्रेजी भाषा का ज्यादा प्रयोग होने के कारण लोगों को दिक्कत हो रही है ।

. डिजिटलीकरण होने के कारण आर्थिक विकास में भी परेशानी बढ गई है, लोग खरीद ब्रिक्री में भी (UPI) का ज़्यादा प्रयोग कर रहे है, इसके वजह से गाँव-देहात के लोगों को दिक्कत हो रही है ।

. पुरानी संस्कृति धीरे-धीरे नई संस्कृति में बदल रही है ।

. नई पीढी लोगों में अपनी मातृभाषा को भूल रहे है ।

डिजिटल युग में शिक्षा का विस्तार- डिजिटल युग के समय में शिक्षा पर विकास अच्छी हो रही है, ऑनलाइन कक्षाएं गाँव देहात तक पहुँ पा रही है । यूट्यूब चैनल के माध्यम से स्कूल, कॉलेज, कम्पीटिशन की सारी क्लास मिल रही है । इसमे मुक्त शिक्षा भी मिल रही है, जैसे-स्वंयम, स्वंयमप्रभा, दीक्षा, ज्ञानवाणी, ज्ञान-दर्शन, इत्यादि चैनल उपलब्ध हो रहे है । आज के छोटे-छोटे बच्चे भी ऑनलाइन विडियों देखकर ही शुरुआती शिक्षा सिख रहे है । सरकारी पोर्टल के

द्वारा बच्चों को नए अवसर मिल रहे । सभी स्कूल, कॉलेज के बच्चों को छात्रवृति, प्रवेश परीक्षा और फॉर्म ऑनलाइन भरना आसान हो गया है ।

. **ओपन रिसोर्सेज :-** डिजिटल लाइब्रेरी, वीडियो लेक्चर

. **कौशल विकास :-** आईटी -सक्षम रोजगारो की तैयारी ।

. **दुरस्थ शिक्षा -** ऑनलाइन कक्षाएं, छात्रवृति व परीक्षाओं की जानकारी ।

. **डिजिटल शिक्षा अवसर प्रदान करती है :-** लचीलापन संसाधनों की व्यापक उपलब्धता,स्व-अध्ययन और दुरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच ।, स्व-अध्ययन और दूरस्थ क्षेत्रो तक पहुँच ।

. **प्रभावशीलता पद्धति :-** तकनीकी शिक्षा तभी सफल होती है, जब उपयुक्त शिक्षण रणनीति प्रशिक्षित शिक्षक और गुणवत्तापूर्ण सामग्री हो ।

. **डिजटल असमानता बड़ी चुनौती -** उपकरण, इंटरनेट और भाषा समर्थन की कमी से अनेक विद्यार्थी पीछे रह जाते ।

. **समाधान ब्लेंडेड लर्निंग:-** ऑनलाइन+ऑफलाइन का संयोजन, स्थानीय भाषा में सामग्री और शिक्षक-प्रशिक्षण से डिजिटल शिक्षा को समावेशी बनाया जा सकता है ।

आजीविका और अर्थव्यवस्था- डिजिटल पुग ने केवल संचार और शिक्षा को ही नहीं बदला बल्कि, आजीविका (रोजगार) और अर्थव्यवस्था की संरचना में भी गहरा परिवर्तन किया है । इंटरनेट, मोबाईल तकनीक, ऑनलाइन बाजर, डिजिटल भुगतान और ई-गवर्नेस ने पारंपरिक रोजगार के स्वरूप को नई दिशा दी है, विशेष रूप से ग्रामीणो और जनजातीय क्षेत्रों में यह परिवर्तन अवसर और चुनौती दोनो रूप दिखाई देती है ।

पारंपरिक आजीविका पर प्रभाव-

. डिजिटल युग से पहले आजीविका मुख्यता कृषि, वनोपज, हस्तगशिल्प, पशुपालन और स्थानीय व्यापार पर आधारित था ।

. किसानों और कारीगरों को मौसम, बीज दाम और सरकारी योजनाओं की जानकारी मोबाइल पर मिलने लगी

. वनोपज गौर हस्तशिल्प के उत्पादों को ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से व्यापक बाजार मिलने की संभावना बढ़ी ।

. सरकारी संस्था से पेड़-पौधों का वितरण कम दामों में दिया जा रहा है, ताकि लोगों के आजीविका के स्रोत बने

. डिजिटल युग में नए काम भी मिल गए है, जैसे-ऑनलाइन पढ़ाना, डेटा एंट्री, डिजिटल सेवाएँ और ई-कॉमर्स इत्यादि इनकम के रास्ते खुल गए है ।

. नकारात्मक पहलू में देखा जाए तो सभी जगह इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल ज्ञान की कमी है ।

. बाहरी बाजार और सस्ते औधोगिक उत्पादों के कारण पारंपरिक उत्पादों की मांग घटने लगी ।

. कुछ युवाओं में परंपरागत पेशा में रूचि धीरे-धीरे कम हो रही है ।

डिजिटल अर्थव्यवस्था और रोजगार के नए अवसर-

. ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आधारित कार्य :- ई-कॉमर्स, डिजिटल मार्केटिंग, कंटेट क्रिएशन, डेटा एंट्री, ऑनलाइन ट्यूशन, ब्लॉग, इत्यादि ।

. सस्थानीय उत्पादों का ऑनलाइन व्यापारः- हस्तशिल्प, लोककला, जैविक उत्पाद, वनोपज आदि को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों तक पहुँचाया ।

. डिजिटल सेवाएँ: कॉमन सर्विस सेंटर (CSC)-ऑनलाइन फॉर्म भरना, आधार /पेंशन / बीमा जैसी सेवाएँ जिससे स्थानीय युवाओं को स्वरोजगार मिला ।

. डिजिटल माध्यमों से शहरों में नौकरी की जानकारी आसानी से उपलब्ध होने से ग्रामीण/जनजातीय युवाओं का प्रवासन बढ़ा है ।

. रोजगार के अधिक विकल्प, कौशल विकास के ऑनलाइन कोर्स ।

. स्थानीय अर्थव्यवस्था और पारंपरिक आजीविका का कमजोर होना, यह एक चुनौती देखने को मिलता है ।

निष्कर्ष (conclusion)

डिजिटल युग ने जनजातीय समाज के जीवन में गहरा परिवर्तन किया है। मोबाइल, इंटरनेट और ऑनलाइन सेवाओं ने शिक्षा, रोजगार, सरकारी योजनाओं और बाहरी दुनिया से संपर्क को आसान बनाया है। आज जनजातीय युवा पढ़ाई, काम और जानकारी के लिए डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर रहे है, जिससे उनके सामने नए अवसर खुल रहे है। कला, शिल्प, नृत्य और भाषा को डिजिटल रूप में सुरक्षित करने की संभावना भी इसी युग की देन है। लेकिन इसके साथ-साथ कुछ गंभीर चुनौतियों भी सामने आई है। मातृभाषा का कम उपयोग, परंपराओं में ढील, सामुदायिक जीवन में कमी, संस्कृति का बाजारीकरण और मीडिया में गलत चित्रण जैसी समस्याएँ जनजातीय पहचान को कमजोर कर सकती है। यदि डिजिटल तकनीक का उपयोग केवल दिखावे, नकल और लाभ के लिए किया गया, तो जनजातीय संस्कृति की मौलिकता धीरे-धीरे समाप्त हो सकती है।

अतः आवश्यकता है कि डिजिटल विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक संरक्षण को भी समान महत्व दिया जाए जनजातीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री, समुदाय की भागीदारी से परियोजनाएँ, शिक्षा में स्थानीय संस्कृति का समावेश और युवाओं व महिलाओं को आगे बढ़ाने जैसे प्रयासों से तकनीक को सशक्तिकरण का माध्यम बनाया जा सकता है, सही दिशा दिशा में उपयोग किया जाए तो डिजिटल युग जनजातीय समाज के लिए खतरा नहीं, बल्कि उनकी संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए उन्हें आगे बढ़ाने का एक मजबूत साधन बन सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सुची (References)

रॉय चन्द्र शरत (1912) - "मुण्डा एण्ड देयर कंट्री" क्राउन पब्लिकेशन छोटानागपुर इड़िया।

पाण्डेय गया (2001)- डेवलपमेंट एंथ्रोपोलॉजी कॉन्सेप्ट" पब्लिकेशन कम्पनी न्यू दिल्ली इंडिया।

एल्विन वेरियर (1964) - "द लिटिल द ट्राइबलवाल्ड" पब्लिकेशन ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।

सुंदर नंदिनी (1997)- "सबाल्टर्न एण्ड सॉवरेन्स " ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस।

कुमार अनिल (2018)- "डिजिटल शिक्षा: संभावनाएं और चुनौतियाँ प्रकाशन स्थानः नई दिल्ली: हिंदी शोध-पत्रिका।

मिश्रा, राकेश 2019- "डिजिटल युग और भारतीय अर्थव्यवस्था प्रकाशन स्थान: नई दिल्ली में इंडिया।

वर्मा सुनीता 2021 - "ऑनलाइन शिक्षा और छात्र अनुभव" प्रकाशन स्थान: लखनऊ इंडिया।